Kolhan University, Chaibasa

History honours, Sem – 1

Paper – CC2

<u>फ्रांस की क्रांति१७८९</u> :- 1789 की फ्रांसीसी क्रांति इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना है| . इस क्रांति ने न सिर्फ फ्रांस की स्तिथि में बदलाव लाए बल्कि विश्व को भी प्रभावित किया |क्रांति जब भी होती है बदलाव लाती है और बदलाव की जरुरत तभी होती है जब स्तिथि भयावह और असहनीय हो जाती है |फ्रांस की क्रांति के समय भी फ्रांस की स्तिथि अत्यंत ही दयनीय हो गई थी |न राजा को जनता के दुःख दर्द में दिलचस्पी थी न कानून व्यवस्था में एकरूपता थी |लोगों की आर्थिक स्तिथि भी सोचनीय थी| समाज वर्गों में बंटा था |चरों तरफ अव्यवस्था थी |ऐसा लगता था मानो क्रांति खुद क्रांति के लिए आह्वान कर रही हो |

<u>फ्रांसीसी क्रांति के कारण</u> :- फ्रांसीसी क्रांति के कारणों को हम निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझ सकते है -

१-राजनितिक कारण

२-सामाजिक कारण

३-आर्थिक कारण

४-दार्शनिक कारण

<u>१-राजनितिक कारण</u> :- क्रांति के लिए उत्तरदायी राजनितिक कारण क पीछे निम्न बातें विद्यमान थी ---

अ- लुइ १४वें के उत्तराधिकारी ---लुइ १४वां भले ही एक निरंकुश शाशक था तथापि वह योग्य था |उसके शाशन काल में फ्रांस की उन्नति चरम सीमा पर थी |लुइ १४वां के उत्तराधिकारी आयोग्य निकले |उनमे साम्राज्य को सँभालने की योग्यता न थी |लुई १५वां अल्पायु में राजा बना |लुइ १६वां अपनी रानी मरीन अन्तोइनेत्ते के प्रभाव में रहा |

ब- दोषयुक्त शाशन व्यवस्था --उस समय फ्रांस में जो शाशन व्यवस्था थी वो पूर्णतः दोष युक्त थी |कानूनों में कही भी एकरूपता नहीं थी |लुइ १६वां कहा करता था मै| ही कानून हूँ |कर प्रणाली भी दोषपूर्ण थी |

<u>२- सामाजिक कारण</u> :- फ्रांस का समाज दो वर्गों में बंटा था -विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग और सुविधाहीन वर्ग |

विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग में पादरी वर्ग और कुलीन वर्ग शामिल थे और सुविधाहीन वर्ग में साधारण जनता और कृषक वर्ग थे |पादरी और कुलीन वर्ग को सारे विशेषाधिकारप्राप्त थे और वे सभी प्रकार के करों से मुक्त थे |वहीँ दूसरी ओर सुविधाहीन वर्ग को किसी भी प्रकार का ना सामाजिक अधिकार था ना ही राजनितिक |ऊपर से करों का सारा बोझ भी उन्ही पर था |

३- आर्थिक कारण :- लुइ १४वें के सप्तवर्षीय युद्धों ने फ्रांस की आर्थिक दशा पर बुरा प्रभाव डाला था |लुइ १५वें ने भी युद्धों से बचने का प्रयास नहीं किया |लुइ १६वां ने फ्रांस का दिवाला निकल दिया |उसके समय में फ्रांस ने अमेरिकी स्वतंत्रता युद्धों में भाग लिया |उसने करों का सारा बोझ साधारण वर्ग और कृषकों पर डाला जो पहले से ही कर देने में अक्षम थे |इस आर्थिक संकट से निपटने के लिए उसने संसद से मदद मांगी जिसके बाद स्टेट्स जनरल की बैठक बुलाई गई जो अंततः क्रांति की शुरुआत का कारण बनी|उसकी विलासिता ने भी फ्रांस को आर्थिक रूप से काफी कमजोर किया |

४- दार्शनिक कारण :- फ्रांस में क्रांति के लिए जागरूकता लाने और क्रांति की जरुरत को शिद्दत से महसूस करने में फ्रांस के दार्शनिकों ने अहम् भूमिका निभाई |मॉन्टेस्क्यू ,रूसो, वाल्तेयर फ्रांस के महान विद्वान थे जिन्होंने अपने लेखों द्वारा लोगों क बीच के अंधकार को दूर किया और लोगों को उनके मानवीय अधिकारों से ना सिर्फ अवगत कराया बल्कि उन्हें उन अधिकारों के लिए लड़ना और आवाज़ उठाना भी सिखाया |रूसो की पुस्तक "दी सोशल कॉन्ट्रैक्ट" ने जनता के हाथों में राज्य की शक्ति होने की बात कही |मॉन्टेस्क्यू संवैधानिक शक्ति का पक्षधर था |वहीँ वाल्तेयर धार्मिक सहिष्णुता का पक्षधर था |

मूल्यांकन :- इस प्रकार हम देखते है की फ्रांस की १७८९ की क्रांति ना तो किसी एक कारण की परिणाम थी नाही ये कोई आकस्मिक घटना थी |ये क्रांति करीब २०० वर्षों से चली आ रही अत्याचारों और शोषण की कहानी का परिणाम थी जिसने ना सिर्फ फ्रांस में बदलाव का रास्ता खोला बल्कि उसने विश्व के अनेक देशों को भी प्रभावित किया |इस क्रांति की सबसे बड़ी उपलब्धी थी "स्वरंत्रता ,समानता और भ्रातृत्वा "की भावना का सन्देश जिसे आज विश्व के अनेक देशों जिसमे भारत भी शामिल है ने अपना आदर्श बनाया है |

By:-
Shaheena Parween
Lecturer, JLN College,
Chakradharpur
Dept. of History